Edition : 5
Date : 25 July 2021
विक्रमी संवत् 2078 युगाब्द 5123
श्रावण कृष्ण एकम
khandelwalschool.com

The KVC Voice

By Shree Khandelwal Vaishya Central Senior Sec. School

विशिष्ट व्यक्तित्व परिचय कार्यक्रम में इस माह स्कूल में कल्पना चावला के विषय के बारे में जानकारी दी गई । जिनका जन्मदिवस इसी माह 1 जुलाई को था। स्कूल के कुछ विद्यार्थियों ने उन पर कुछ पंक्तियां भी कही जिनका लिंक नीचे दिया हुआ है।

कल्पना चावला : संक्षिप्त परिचय

कल्पना चावला एक भारतीय अमरीकी अन्तरिक्ष यात्री और अन्तरिक्ष शटल मिशन विशेषज्ञ थी और अन्तरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय महिला थी। वे कोलंबिया अन्तरिक्ष यान आपदा में मारे गए सात यात्री दल सदस्यों में से एक थीं।

प्रारंभिक जीवन

भारत की महान बेटी-कल्पना चावला करनाल, हरियाणा, भारत में जन्मी थी। उनका जन्म 17 मार्च् सन् 1962 में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री बनारसी लाल चावला और माता का नाम संजयोती देवी था। वह अपने परिवार के चार भाई बहनो में सबसे छोटी थी। घर में सब उसे प्यार से मोंटू कहते थे। कल्पना की प्रारंभिक पढाई “टैगोर बाल निकेतन” में हुई। कल्पना जब आठवी कक्षा में पहुचीं तो उन्होंने इंजीनियर बनने की इच्छा प्रकट की। उसकी माँ ने अपनी बेटी की भावनाओं को समझा और आगे बढने में मदद की। पिता उसे चिकित्सक या शिक्षिका बनाना चाहते थे। किंतु कल्पना बचपन से ही अंतरिक्ष में घूमने की कल्पना करती थी। कल्पना का सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण था - उसकी लगन और जुझार प्रवृति। कल्पना न तो काम करने में आलसी थी और न असफलता में घबराने वाली थी। उनकी उड़ान में दिलचस्पी J R D Tata 'जहाँगीर रतनजी दादाभाई टाटा से प्रेरित थी जो एक अग्रणी भारतीय विमान चालक और उद्योगपति थे।

शिक्षा

कल्पना चावला ने प्रारंभिक शिक्षा टैगोर पब्लिक स्कूल करनाल से प्राप्त की। आगे की शिक्षा वैमानिक अभियान्त्रिकी में पंजाब इंजिनियरिंग कॉलेज, चंडीगढ़, भारत से करते हुए 1982 में अभियांत्रिकी स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वे संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए 1982 में चली गईं और 1984 वैमानिक अभियान्त्रिकी में विज्ञान निष्णात की उपाधि टेक्सास विश्वविद्यालय आर्लिंगटन से प्राप्त की। कल्पना जी ने 1986 में दूसरी विज्ञान निष्णात की उपाधि पाई और 1988 में कोलोराडो विश्वविद्यालय बोल्डर से वैमानिक अभियंत्रिकी में विद्या वाचस्पति की उपाधि पाई। कल्पना जी को हवाईजहाज़ों, ग्लाइडरों व व्यावसायिक विमानचालन के लाइसेंसों के लिए प्रमाणित उड़ान प्रशिक्षक का दर्ज़ा हासिल था। उन्हें एकल व बहु इंजन वायुयानों के लिए व्यावसायिक विमानचालक के लाइसेंस भी प्राप्त थे। अन्तरिक्ष यात्री बनने से पहले वो एक सुप्रसिद्ध नासा कि वैज्ञानिक थी।

एम्स अनुसंधान केंद्र

१९८८ के अंत में उन्होंने नासा के एम्स अनुसंधान केंद्र के लिए ओवेर्सेट मेथड्स इंक के उपाध्यक्ष के रूप में काम करना शुरू किया, उन्होंने वहाँ वी/एसटीओएल में सीएफ़डी पर अनुसंधान किया

अंतरिक्ष शटल सिम्युलेटर में चावला

कल्पना जी मार्च १९९५ में नासा के अंतरिक्ष यात्री कोर में शामिल हुईं और वे १९९८ में अपनी पहली उड़ान के लिए चुनी गयीं थी। उनका पहला अंतरिक्ष मिशन १९ नवम्बर १९९७ को छह अंतरिक्ष यात्री दल के हिस्से के रूप में अंतरिक्ष शटल कोलंबिया की उड़ान एसटीएस-८७ से शुरू हुआ। कल्पना जी अंतरिक्ष में उड़ने वाली प्रथम भारत में जन्मी महिला थीं और अंतरिक्ष में उड़ाने वाली भारतीय मूल की दूसरी व्यक्ति थीं। राकेश शर्मा ने १९८४ में सोवियत अंतरिक्ष यान में एक उड़ान भरी थी। कल्पना जी अपने पहले मिशन में १.०४ करोड़ किलोमीटर या ६५ लाख मील का सफ़र तय कर के ३६५ घंटों में पृथ्वी की २५२ परिक्रमाएँ कीं । एसटीएस-८७ के दौरान स्पार्टन उपग्रह को तैनात करने के लिए भी ज़िम्मेदार थीं, इस खराब हुए उपग्रह को पकड़ने के लिए विंस्टन स्कॉट और तकाओ दोई को अंतरिक्ष में चलना पड़ा था। पाँच महीने की तफ़्तीश के बाद नासा ने कल्पना चावला को इस मामले में पूर्णतया दोषमुक्त पाया, त्रुटियाँ तंत्रांश अंतरापृष्ठों व यान कर्मचारियों तथा ज़मीनी नियंत्रकों के लिए परिभाषित विधियों में मिलीं।

एसटीएस-८७ की उड़ानोपरांत गतिविधियों के पूरा होने पर कल्पना जी ने अंतरिक्ष यात्री कार्यालय में, तकनीकी पदों पर काम किया, उनके यहाँ के कार्यकलाप को उनके साथियों ने विशेष पुरस्कार दे के सम्मानित किया।

१९८३ में वे एक उड़ान प्रशिक्षक और विमानन लेखक, जीन पियरे हैरीसन से मिलीं और शादी की और १९९० में एक देशीयकृत संयुक्त राज्य अमेरिका की नागरिक बनीं।

भारत के लिए चावला की आखिरी यात्रा १९९१-१९९२ के नए साल की छुट्टी के दौरान थी जब वे और उनके पति, परिवार के साथ समय बिताने गए थे। २००० में उन्हें एसटीएस-१०७ में अपनी दूसरी उड़ान के कर्मचारी के तौर पर चुना गया। यह अभियान लगातार पीछे सरकता रहा, क्योंकि विभिन्न कार्यों के नियोजित समय में टकराव होता रहा और कुछ तकनीकी समस्याएँ भी आईं, जैसे कि शटल इंजन बहाव अस्तरों में दरारें। १६ जनवरी २००३ को कल्पना जी ने अंततः कोलंबिया पर चढ़ के विनाशरत एसटीएस-१०७ मिशन का आरंभ किया।

https://www.facebook.com/kvcjaipur/videos/334957014864496/

https://youtu.be/VZfsJ_u8pms

Edition : 5 | Date : 25 July 2021 | विक्रमी संवत् 2078 युगाब्द 5123 | श्रावण कृष्ण एकम
khandelwalschool.com

The KVC Voice

By Shree Khandelwal Vaishya Central Senior Sec. School

स्वतंत्रता दिवस समारोह 2021

स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम स्कूल के मुख्य कार्यक्रमो में से एक कार्यक्रम है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन हर्षोल्लास के साथ कोरोना महामारी पर राज्य सरकार की गाइडलाइन को ध्यान में रखते हुए मनाया जाएगा।

पूर्व छात्रों को स्नेहिल आमंत्रण

जिस प्रकार समाज बन्धु एवं स्कूल के पूर्व छात्रों द्वारा स्कूल के सौंदर्यीकरण एवं विकास में सहयोग किया जा रहा है यह अत्यंत सराहनीय है इस लिये प्रबन्ध समिति द्वारा उन बन्धुओ का सम्मान किया जावेगा। साथ ही प्रबन्ध समिति स्कूल के सभी पूर्व छात्रों को जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप (व्हाट्सएप फेसबुक इत्यादि) से जुड़े हुए हैं उनसे भी आग्रह करती है कि वह स्वतंत्रता दिवस समारोह 2021 में विद्यालय पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ावे I प्रबन्ध समिति इस कार्यक्रम के सहभागी बनने के लिय सभी को सादर आमंत्रित करती है।

The KVC Voice
By Shree Khandelwal Vaishya Central Senior Sec. School

झलकियां

26 जनवरी 2021

The KVC Voice
By Shree Khandelwal Vaishya Central Senior Sec. School

झलकियां

26 जनवरी 2021

The KVC Voice

By Shree Khandelwal Vaishya Central Senior Sec. School

भारत की नदियॉं :— महानदी, पंच सरोवर, बिन्दु सरोवर, एवं नारायण सरोवर।

By - Prashant Mourya (Class - 6)

महानदी का उदगम स्थल - रायपुर जिले (मध्यप्रदेश) के दक्षिण पूर्व में सिंघावा पर्वत से निकलकर उडीसा में कटक के पास सागर मे मिलती है।
. बहाव - रायपुर, बस्तर, बिलासपुर आदि
. लम्बाई - 860 कि.मी.
विश्व का सबसे लंबा बांध हीराकुण्ड महानदी पर ही बना है।

हिन्दुओं की श्रद्धाभाव के केन्द्र पांच सरोवर है।
1 बिन्दु सरोवर, 2 नारायण सरोवर, 3 पम्पा सरोवर, 4 पुष्कर झील, 5 मानसरोवर

बिन्दु सरोवर दो है
1. भुवनेश्वर के बाजार में स्थित। यह एकाग्रता की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है। सरोवर के मध्य एक विशाल मन्दिर है इसमें समस्त तीर्थो का जल लाकर डाला हुआ है।
2. सिद्धपुर में स्थित इसकी मान्यता मातृ श्राद्ध के लिये सर्वाधिक है। अतः इसे मातृ गया भी कहा जाता है।

कच्छ के रन में यह अति प्राचीन तीर्थ क्षेत्र है। इसका निर्माण गंगोत्री से पवित्र जल लाकर किया गया है। कार्तिक पूर्णिमा पर यहां एक बड़ा मेला लगता है। सरोवर के पास गोवर्धन नाथ, आदि नारायण तथा कोटेश्वर महादेव के मन्दिर है।

दिवस, त्यौहार, जयंती

28 जुलाई	वन महोत्सव दिवस, नाग पंचमी (राजस्थान)	11 अगस्त	मे. तीज (जयपुर) श्री सेवक जयन्ती
31 जुलाई	केर पूजा (त्रिपुरा)	13 अगस्त	कल्याण धणी पदयात्रा प्रारम्भ
1 अगस्त	तिलक पुण्य दिवस, मु. जिलहिज	15 अगस्त	तुलसीदास जयन्ती, स्वतन्त्रता दिवस
2 अगस्त	गुरू हरकिशन जयन्ती, श्रावण वनसोमवार व्रत	16 अगस्त	श्री हरि जयन्ती, श्रावण वन सोमवार व्रत
6 अगस्त	मास शिवरात्रि	18 अगस्त	कतल की रात (मु.), झूलन यात्रा प्रारम्भ
8 अगस्त	देवपितृकार्य अमा. हरियाली अमा	19 अगस्त	ताजिया (मुहर्रम)
		22 अगस्त	रक्षाबंधन, सत्यव्रत शरद ऋतु प्रारम्भ अमरनाथ यात्रा, हयग्रीव जयन्ती

PHRC
PILES HOSPITAL & RESEARCH CENTER

DR. DINESH SHAH
M.S, FAIS, FIAGES, FACRSI, FISCP, FACS (USA)

DR. ANSUL SHAH
M.B.B.S, MS

The best super specialty ano-rectal surgery hospital in North India.
This is 1 km inside from main Sikar Road.
7 km from Railway Station and Central Bus Stand.

+91-141-2334959 drdineshshah@pilesclinic.com

- G-24, Unnati Tower,Central Spine Vidyadhar Nagar, Jaipur

व्यक्ति विशेष : भामाशाह

जन्म दिनांक : 28 जून 1547

दानवीर भामाशाह का जन्म राजस्थान के मेवाड़ राज्य में वर्तमान पाली जिले के सादड़ी गांव में 28 जून 1547 को ओसवाल जैन परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम भारमल था जो रणथम्भौर के किलेदार थे।

भामाशाह (1547 - 1600) बाल्यकाल से मेवाड़ के राजा महाराणा प्रताप के मित्र, सहयोगी और विश्वासपात्र सलाहकार थे। अपरिग्रह को जीवन का मूलमन्त्र मानकर संग्रहण की प्रवृत्ति से दूर रहने की चेतना जगाने में आप सदैव अग्रणी रहे। मातृ-भूमि के प्रति अगाध प्रेम था और दानवीरता के लिए भामाशाह नाम इतिहास में अमर है।

भामाशाह का निष्ठापूर्ण सहयोग महाराणा प्रताप के जीवन में महत्वपूर्ण और निर्णायक साबित हुआ। मातृ-भूमि की रक्षा के लिए महाराणा प्रताप का सर्वस्व होम हो जाने के बाद भी उनके लक्ष्य को सर्वोपरि मानते हुए अपनी सम्पूर्ण धन-संपदा अर्पित कर दी। यह सहयोग तब दिया जब महाराणा प्रताप अपना अस्तित्व बनाए रखने के प्रयास में निराश होकर परिवार सहित पहाड़ियों में छिपते भटक रहे थे। मेवाड़ के अस्मिता की रक्षा के लिए दिल्ली गद्दी का प्रलोभन भी ठुकरा दिया। महाराणा प्रताप को दी गई उनकी हरसम्भव सहायता ने मेवाड़ के आत्म सम्मान एवं संघर्ष को नई दिशा दी।

भामाशाह अपनी दानवीरता के कारण इतिहास में अमर हो गए। भामाशाह के सहयोग ने ही महाराणा प्रताप को जहाँ संघर्ष की दिशा दी, वहीं मेवाड़ को भी आत्मसम्मान दिया। कहा जाता है कि जब महाराणा प्रताप अपने परिवार के साथ जंगलों में भटक रहे थे, तब भामाशाह ने अपनी सारी जमा पूंजी महाराणा को समर्पित कर दी। तब भामाशाह की दानशीलता के प्रसंग आसपास के इलाकों में बड़े उत्साह के साथ सुने और सुनाए जाते थे।

महाराणा प्रताप के लिए उन्होंने अपनी निजी सम्पत्ति में इतना धन दान दिया था कि जिससे २५००० सैनिकों का बारह वर्ष तक निर्वाह हो सकता था। प्राप्त सहयोग से महाराणा प्रताप में नया उत्साह उत्पन्न हुआ और उन्होंने पुन: सैन्य शक्ति संगठित कर मुगल शासकों को पराजित करा और फिर से मेवाड़ का राज्य प्राप्त किया।
वह बेमिसाल दानवीर एवं त्यागी पुरुष थे। आत्मसम्मान और त्याग की यही भावना उनके स्वदेश, धर्म और संस्कृति की रक्षा करने वाले देश-भक्त के रूप में शिखर पर स्थापित कर देती है। धन अर्पित करने वाले किसी भी दानदाता को दानवीर भामाशाह कहकर उसका स्मरण-वंदन किया जाता है। उनकी दानशीलता के चर्चे उस दौर में आसपास बड़े उत्साह, प्रेरणा के संग सुने-सुनाए जाते थे। उनके लिए पंक्तियाँ कही गई हैं-

वह धन्य देश की माटी है, जिसमें भामा सा लाल पला।उस दानवीर की यश गाथा को, मेट सका क्या काल भला॥

ऐसी विरल ईमानदारी एंव स्वामिभक्ति के फलस्वरूप भामाशाह के बाद उनके पुत्र जीवाशाह को महाराणा प्रताप के पुत्र अमर सिंह ने भी प्रधान पद पर बनाये रखा । जीवाशाह के उपरांत उनके पुत्र अक्षयराज को अमर सिंह के पुत्र कर्ण सिंह ने प्रधान पद पर बनाये रखा ।इस तरह एक ही परिवार की तीन पीढ़ियो ने मेवाड़ मे प्रधान पद पर स्वामिभक्ति एंव ईमानदारी से कार्य कर जैन धर्म का मान बढ़ाया। महाराणा स्वरूप सिंह एंव फतेह सिंह ने इस परिवार के लिए सम्मान स्वरुप दो बार राजाज्ञाएँ निकाली कि इस परिवार के मुख्य वंशधर का सामूहिक भोज के आरंभ होने के पूर्व तिलक किया जाये । जैन श्रेष्टी

The KVC Voice

By Shree Khandelwal Vaishya Central Senior Sec. School

स्मरणीय

25 जुलाई | बलिदानदिवस

उत्तराखंड के टिहरी के महान स्वतंत्रता सेनानी श्री देव सुमन

25 जुलाई | निर्वाणदिवस

समाजसुधारक और स्वदेशी आंदोलन के प्रणेता गणेश वासुदेव जोशी

26 जुलाई | पुनरुत्थानदिवस

सम्राट कृष्णदेव राय ने विजयनगर साम्राज्य के पुनरुत्थान की शुरुआत की

26 जुलाई | जन्मदिवस

समग्र मानवता के धर्माचार्य आचार्य आनंद ऋषि

26 जुलाई | विजयदिवस

कारगिल विजय दिवस

27 जुलाई | निर्वाणदिवस

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

27 जुलाई | स्थापनादिवस

CRPF
स्थापना दिवस

28 जुलाई | जन्मदिवस

कर्मयोगी केशवराम शास्त्री के. का. शास्त्री

29 जुलाई | पुण्यतिथि

सामाजिक क्रांति के अग्रदूत ईश्वर चंद्र विद्यासागर

30 जुलाई | निर्वाणदिवस

कर्नाटक सिंह गंगाधर बालकृष्ण देशपांडे

31 जुलाई | जन्मदिवस

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद

31 जुलाई | बलिदानदिवस

वीर क्रांतिकारी उधम सिंह

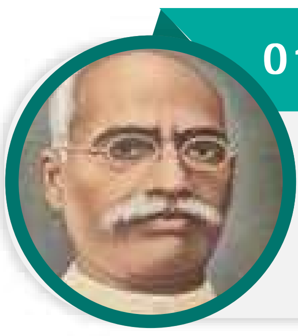

01 अगस्त | पुण्यतिथि

उपन्यासकार देवकीनंदन खत्री

01 अगस्त | जन्मदिवस

भारतरत्न स्वातंत्र्य सैनिक पुरुषोत्तमदास टंडन

01 अगस्त | निर्वाणदिवस

लोकमान्य तिलक

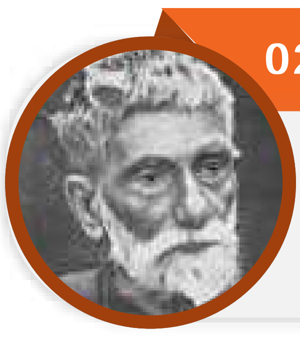

02 अगस्त | जन्मदिवस

भारतीय रसायनशास्त्री आचार्य प्रफुल्लचंद्र राय

Edition : 5
Date : 25 July 2021
विक्रमी संवत् 2078 युगाब्द 5123
श्रावण कृष्ण एकम
khandelwalschool.com

The KVC Voice

By Shree Khandelwal Vaishya Central Senior Sec. School

स्मरणीय

02 अगस्त | जन्मदिवस
भारतीय ध्वज को डिजाइन करने वाले पिंगल वेंकैया

03 अगस्त | स्थापनादिवस
भारतीय परमाणु ऊर्जा आयोग

03 अगस्त | रक्षाबंधन
रक्षाबंधन

03 अगस्त | जन्मदिवस
प्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोलशास्त्री वेंकटेश बापूजी केतकर

03 अगस्त | जन्मदिवस
राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

03 अगस्त | जन्मदिवस
भारतरत्न विधानचंद्र राय

03 अगस्त | पुण्यतिथि
आध्यात्मिक गुरू स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती

04 अगस्त | जन्मदिवस
हिमाचल का गौरव डॉ. यशवंतसिंह परमार

05 अगस्त | निर्वाणदिवस
स्वातत्रय सैनक अच्च्युतराव पटवर्धन

05 अगस्त | जन्मदिवस
ओजस्वी कवि डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन

05 अगस्त | जन्मदिवस
इतिहासकार वासुदेव वामन खरे

05 अगस्त | पूजनदिवस
श्री राममंदिर भूमि पूजन

06 अगस्त | निर्वाणदिवस
स्वातंत्रय सैनिक सुरेन्द्रनाथ बनर्जी

06 अगस्त | हमलादिवस
मानव इतिहास का कलंक हिरोशीमा शहेर पर परमाणु हमला

06 अगस्त | जन्मदिवस
पानीबाबा राजेन्द्र सिंह

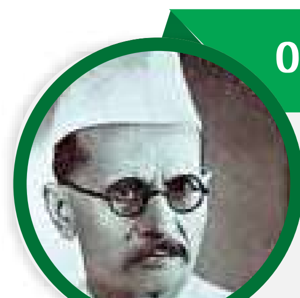
07 अगस्त | जन्मदिवस
पुरातत्वगय वासुदेवशरण अग्रवाल

Edition : 5 | Date : 25 July 2021 | विक्रमी संवत् 2078 युगाब्द 5123 | श्रावण कृष्ण एकम
khandelwalschool.com
The KVC Voice
By Shree Khandelwal Vaishya Central Senior Sec. School

स्मरणीय

07 अगस्त | जन्मदिवस
कृषि वैज्ञनिक पदमश्री, पदमभूषण एम.एस.स्वामीनाथन

07 अगस्त | निर्वाणदिवस
जण गण मन के रचयिता रवीद्रनाथ टैगोर

08 अगस्त | जन्मदिवस
संगीतकार सिध्धेश्वरी

08 अगस्त | राज्याभिषेक दिवस
महान प्रतापी राजा कृष्णदेव राय

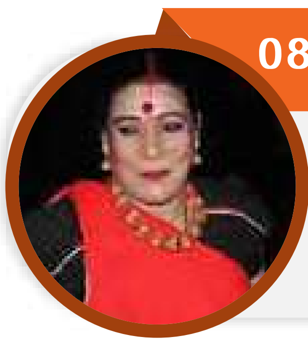

08 अगस्त | जन्मदिवस
पंडवानी गायिका तीजनबाई

09 अगस्त | बलिदानदिवस
कातिकारी काशीनाथ पगधरे

09 अगस्त | बलिदानदिवस
कातिकारी गोविन्द ठाकुर

09 अगस्त | घटनादिवस
ऐतिहासिक कांतिकारी घटना काकोरी

10 अगस्त | जन्मदिवस
नारायणराव पेशवा

10 अगस्त | जन्मदिवस
संगीत सम्राट पंडित विष्णु नारायण भातखंडे

10 अगस्त | निर्वाणदिवस
हुतात्मा शिरीषकुमार

11 अगस्त | बलिदानदिवस
अमर बलिदानी खुदिराम बोस

12 अगस्त | जन्मदिवस
भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान के जनक डॉ. विकम साराभाई

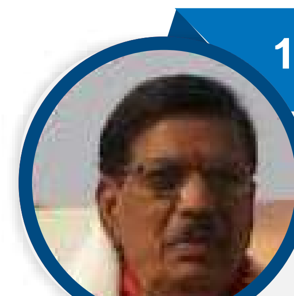

12 अगस्त | जन्मदिवस
आधुनिक भामाशाह जी. पुल्लेरेद्दि

13 अगस्त | जन्मदिवस
मारवाड के रक्षक वीर दुर्गादास राठौड

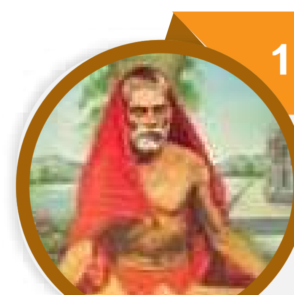

13 अगस्त | जन्मदिवस
सदगुरू श्री टेम्बे महाराज

The KVC Voice

By Shree Khandelwal Vaishya Central Senior Sec. School

स्मरणीय

13 अगस्त | निर्वाणदिवस

महारानी
अहल्याबाई होलकर

13 अगस्त | पुण्यतिथि

प्रमुख स्वामी महाराज

13 अगस्त | निर्वाणदिवस

मेडम भीखजी
रूस्तम कामा

14 अगस्त | बलिदानदिवस

कांतिकारी सरदार बंतासिंह

14 अगस्त | जन्मदिवस

भारतीय तत्वज्ञनी
वेदतिरी महाऋषि

14 अगस्त | संकल्प दिवस

अखण्ड भारत

15 अगस्त | जन्मदिवस

गोवा के स्वाधीनता
सेनानी राजाभाउ महाकाल

15 अगस्त | इच्छामृत्यु

भगतसिंह के चाचा
सरदार अजितसिंह

15 अगस्त | जन्मदिवस

स्वतंत्रयता के उद्घोषक
श्री अरविन्द घोष

15 अगस्त | आजादीदिवस

स्वतंत्रता दिवस

16 अगस्त | पुण्यतिथि

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री
अटल बिहारी वजपेई

16 अगस्त | समाधिदिवस

स्वामी विवेकानंद के गुरू
रामकृष्ण परमहंस

16 अगस्त | जन्मदिवस

कवियत्री
सुभद्राकुमारी चौहान

16 अगस्त | बलिदानदिवस

कांतिकारी तारा रानी

16 अगस्त | जन्मदिवस

प्रथम भारीय वीरांगना
रानी अवंतीबाई लोधी

17 अगस्त | बलिदानदिवस

वीर कांतिकारी
मदनलाल ढींगरा

The KVC Voice

By Shree Khandelwal Vaishya Central Senior Sec. School

स्मरणीय

17 अगस्त | पुण्यतिथि

आधुनिक भागीरथी
दशरथ मांजी

18 अगस्त | पुण्यतिथि

सुभाषचंद्र बोस

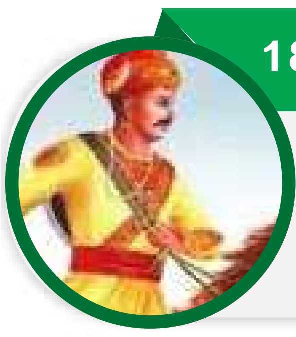

18 अगस्त | जन्मदिवस

अपराजित महान नायक
पेश्वा बाजीराव

18 अगस्त | पुण्यतिथि

राष्ट्र सेविका समिति के तृतीय प्रमुख
संचालिका माननीय उषाताई चाटी

19 अगस्त | जन्मदिवस

1962 के युद्ध में महत्वपुर्ण
भूमिका निभाने वाले
रायफलमेन जसवंत सिंह

19 अगस्त | जन्मदिवस

महासती उपकंवर माता

19 अगस्त | बलिदानदिवस

पूर्वोतर भारत में देवनागरी
लिपि के समर्थक बिनेश्वर ब्रम्ह

20 अगस्त | जन्मदिवस

एकात्मता के पुजारी
पू.संत श्री नारायण गुरू

20 अगस्त | पुण्यतिथि

इतिहासकार
गंगाराम सम्राट

21 अगस्त | पुण्यतिथि

स्वातंत्र्य सैनिक और लेखक
काका साहेब कालेलकर

21 अगस्त | बलिदानदिवस

देशसेवा के लिए समर्पित
पत्रकार शोएबुल्लाह

22 अगस्त | जन्मदिवस

सकंल्प के धनी वैज्ञानिक
डॉ. जगमोहन गर्ग

22 अगस्त | पुण्यतिथि

कर्तव्यनिष्ठ
एकनाथजी रानडे

22 अगस्त | जन्मदिवस

गणेश चतुर्थी

The KVC Voice

By Shree Khandelwal Vaishya Central Senior Sec. School

Alumni's Birthday & Anniversary

Shyam Sunder Jajoo

09 August 1974

9928034692

Dinesh Mattad

M.Com. ICWA (Inter)
Assistant Accounts Officer (PWD)
Government of Rajasthan

11 August 1967

8955966966

Alok Khandelwal

Presently service in Rajasthan State Cooperative Land Development Bank

14 August 1976

9414074190

Jitendra Khandelwal

I'm living in Vidhyadhar Nagar and My Office is also in Vidhyadhar Nagar Central Spine and Factory of Aluminum And UPVC Door windows is at Road No 17 VKI

15 August

9414001462

Krishan Kumar jhalani

Education- M. Com (abst)
E-4 kanti chand road
Banipark

24 August 1977

9252068713

Sudhir Natani

Marriage Anniversary

8 July

The KVC Voice

By Shree Khandelwal Vaishya Central Senior Sec. School

Collarge

JUNED
Class II

LAVYA JANGID
Class III

EERAM
Class III

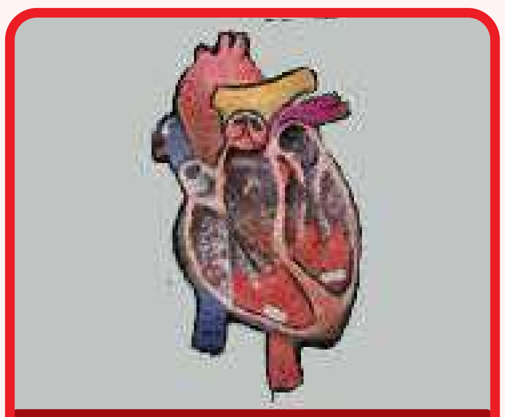

DAKESH SAINI
Class IX

Story Time

Mayank
Class x

Face Your Fear...!!

One day, Swami Vivekananda was returning from temple of ma Durga. Path was very narrow as on one side it was covered by large water tank and on other side there was a high wall.
On the path Swami Vivekananda saw a number of monkeys and those monkeys were not allowing him to pass by the path and whenever swami Vivekananda would take a step forward, those monkeys would make a lot of noise and make angry face, showing their anger by shrieking near his feet.
As Swami Vivekananda took a step forward, monkeys get close to him, Swami ji began to run and monkey started chasing him, Faster swami ji ran, balder monkey gat and tried to catch him and bite him,
A time came when swami ji felt that it would be impossible to escape, just then and old sanyasi called out and said, "Face them..."
Those words brought swami Vivekananda to senses and he stopped running swami ji turned back to boldly face those monkeys.
As soon as swami ji did that, those monkey fell back and left.

Moral:- We should not run away from difficulties, Instead Face Them Boldly.

Jokes & Poem Corner

साइंस टीचर: क्लास में सो रहे हो क्या?
राजू: नही टीचर गुरुत्वाकर्षण से सर
नीचे गिर रहा है

एक बच्चा गायब हो गया,
किसी ने उसका फोटो Whatsapp पर डाल
दिया कि बच्चे को ढुंढने के लिए फोटो फॉरवर्ड
करें।
शाम को बच्चा वापस आ गया।
लेकिन आज एक साल हो गया। और उसका
फोटो अब भी फॉरवर्ड हो रहा है।
बच्चा जहां भी जाता है लोग उसे पकड कर
उसके घर छोड आते है।

STUDENT'S BIRTHDAY

S.N	STUDENT NAME	DOB
1	Sachin	25/07/2005
2	Mo. Hamza	26/07/2015
3	Mo. Faisal	01/08/2010
4	Ummul Vara	10/08/2013
5	Paridhi Saini	11/08/2013
6	Zareen Khan	15/08/2011
7	Mo. Alfaiz	17/08/2010
8	Umera	18/08/2015
9	Anush Kshyap	21/08/2008
10	Mo. Hasnan	23/08/2015

अभिषेक गुर्जर (कक्षा 7)

स्वतंत्रता दिवस

देखो बच्चों यह झंडा प्यारा,
तीनों रंगो का मेल सारा।
रहे सदा यह झंडा ऊंचा
आकाश को रहे यह छुता।
सदा करो तुम इसका मान,
कभी न करना इसका अपमान,
झंडा ही है देश की शान,
बना रहे है यह सदा महान।

**स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं**

The KVC Voice

By Shree Khandelwal Vaishya Central Senior Sec. School

Editor's Panel

Dr Dinesh Shah
Colorectal Surgeon
Piles Hospital & Research Centre
Jaipur
(Secretary, Shree Khandelwal Vaishya Central Sr Sec School Management Committee)

Mr. Kushal Pal Singh
Principal
Shree Khandelwal Vaishya
Central Sr Sec School Jaipur

Varsha Gupta
PGT Economics
Experience 15 years

Dr. Rakesh Gupta
Professor & Dean, Student Welfare
Poornima University Jaipur

Kailash Prasad Gupta
Additional Chief Block Education Officer
Samagra Shiksha Mahwa,
Dausa Rajasthan

Peeyush Shah
Software Engineer
Super Eminent Softwares
Jaipur

प्रश्नोत्तरी

1. भारत में प्रथम स्थापित परमाणु-संयंत्र (Atomic Plant) कौन-सा है?
अ. तारापुर परमाणु संयंत　ब. कैटेनोम परमाणु संयंत्र.
स. कुडनकुलम परमाणु संयंत　द. अन्य

2. यूनाइटेड किंगडम (United Kingdom- U.K) में शामिल हैं -
अ. इंगलैण्ड तथा उतरी आयरलैण्ड
ब. उतरी आयरलैण्ड तथा वेल्स
स. स्कॉटलैण्ड तथा वेल्स　द. (अ) औंर (द)

3. आगरा शहर को किसने बसाया?
अ. सिकन्दर लोदी　ब. अकबर
स. बहलोल लोदी　द. शाहजंहा

4. राष्ट्रिय प्रतीक के निचले भाग में उत्क्रीर्णित शब्द ‘ सत्यमेव जयते' किस सन्दर्भ से लिए गए हैं?
अ. पुराण　ब. जातक
स. मुदकोपनिषद　द. महाभारत

5. अशोक के शिलालेखों की लिपि क्या है?
अ. गुरुमुखी　ब. ब्राह्मी
स. देवनागरी　द. हयरोग्लाइफिक्स

6. बिहू निम्नलिखित में से किसका लोकप्रिय उत्सव है?
अ. असम　ब. उड़ीसा
स. बिहार　द. बंगाल

7. विवेकानन्द रॉक मेमोरियल कहॉं स्थित हैं?
अ. अण्डमान निकोबार　ब. लक्ष्यद्वीप
स. केरल　द. तमिलनाडू

8. महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता के रूप में उल्लेख सबसे पहले किसने किया था?
अ. सुभाषचन्द्र बोस　ब. जवाहरलाल नेहरू
स. बल्ल्भभाई पटेल सी　द. इनमें से कोई नहीं

9. प्रथम गोलमेज सम्मेलन कहाँ हुआ था?
अ . नई दिल्ली मे　ब. लन्दन में
स. बम्बई में　द. इनमें से कोई नही

10. देश का लोह पुरुष किसे कहा जाता है?
अ . सरदार पटेल　ब. पं. जवाहरलाल नेहरू
स. महात्मा गांधी　द. लोकमान्य तिलक

Edition 4 के प्रश्नोत्तरी के उत्तर

1. अ	2. अ	3. स	4. ब	5. द
6. ब	7. द	8. अ	9. स	10. अ

Edition : 5 | Date : 25 July 2021 | विक्रमी संवत् 2078 युगाब्द 5123 | श्रावण कृष्ण एकम

khandelwalschool.com

The KVC Voice

By Shree Khandelwal Vaishya Central Senior Sec. School

From Alumni's Desk

अतीत के झरोखे से

गिरधारी लाल विजयवर्गीय
भूतपूर्व विद्यार्थी (बैच 1992)
आगरा रोड़, जयपुर।

कहते है बच्चे की पहली पाठशाला उसका परिवार होती है तत्पश्चात् वह विद्यालय में प्रवेश लेता है। विद्यालय शिक्षा का वह मंदिर होता है, जहाँ विद्यार्थी अनुशासन, त्याग, समर्पण जैसे सेवा भावों से असीम ज्ञात की प्राप्ति करता है। जयपुर के स्टेशन रोड स्थित करीब सौ वर्ष पुराना खण्डेलवाल स्कूल भी किसी जमाने में मंदिर से कम नहीं था। आज भी विद्यालय में स्थित गंगा माता का मंदिर मेरी स्मृतियों में अंकित है। मंदिर ही नहीं विद्यालय का हर वो स्थान, जहाँ मैं अपने मित्रों के साथ खूब खेला करता था, जी भरके शैतानियाँ किया करता था,

वे सभी सुनहरी और खट्टी-मीठी यादें आज भी तरो-ताजा है। जब मैं अपने आप को तीस साल पीछे ले जाता हूँ तो आँखे नम-सी हो जाती है। मन करता है बच्चों की तरह बस्ता उठाकर अभी जाकर उन कक्षाओं में बैठ जाऊँ, जहाँ मेरे लंगोटिया दोस्त मुझे छेड़ा करते थे। वो विशाल खेल का मैदान, जिसमें आधे घंटे की इंटरवेल में हम न जाने कितने मनोरंजक खेल खेल लिया करते थे। मुझे याद है इंटरवेल में कभी कक्षा में बैठकर खाना नहीं किया। टिफिन को हाथ में लेकर दोस्तों के साथ घूम-घूमकर खाना खाया करते थे।कभी-कभी तो दोस्तों का टिफिन चुराकर खाना खा लिया करते थे। पुराने मित्रों में मेरे सहपाठी नरेन्द्र सिंह राठौड़ का युवावस्था में एक सड़क दुर्घटना में यूँ चले जाना, आज भी मन उदास कर देता है मगर समय बलवान है। आज प्रसन्नता इस बात की है कि 'व्हाट्स-अप' के जरिये अनेक पुराने मित्रों से मिलना आसान हो गया है, जिसके लिए मैं, मेरे ही कक्षा के सहपाठी विदुर पटेल का आभारी हूँ।

उस समय के अनुभवी व प्रतिभाशाली शिक्षकों द्वारा वो पढ़ाने का तरीका दिल को छू जाता था। उस समय की शिक्षा-पद्धति हर प्रकार से विद्यार्थी के लिए उपयोगी हुआ करती थी।मगर जाते हुए समय को कौन रोक सकता है? आज विद्यालय से उस समय के शिक्षा प्राप्त सैंकड़ों विद्यार्थी देश-विदेश में अपनी उपलब्धियों और बेहतरीन कामों से स्कूल का नाम रोशन कर रहे हैं। इस संदर्भ मेंइससे बड़ी प्रसन्नता और गर्व की बात ओर क्या हो सकती है कि उस समय के मेरी कक्षा के ही पुराने मित्र कुशलपाल सिंह आज इसी विद्यालय के प्रिंसीपल है। मैं श्री कुशल पाल सिंह को धन्यवाद देना चाहूँगा कि स्कूल कमेटी के सदस्यों और उनके अथक प्रयासों की बदौलत आज खण्डलेवाल स्कूल अंग्रेजी माध्यम का हो गया है। आज भी स्कूल में बड़ी-चौड़ी कक्षाएँ, विशाल खेल के दो मैदान, विशाल और सुसज्जित लाइब्रेरी, बेहतरीन साइंस लैब्स, अनुवभी व प्रवीण अध्यापक इस बात के प्रमाण है कि विद्यालय पुन: अपनी अतीत की गाथा लिखेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करूँगा कि विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ें और यह शिक्षा के क्षेत्र में पुराने कीर्तिमान फिर से स्थापित करें।इस समय 'कोरोना महामारी' ने सबकी बुरी हालत कर रखी है, इससे शहर के स्कूल भी अछूते नहीं रहें। मेरी प्रभु से यह भी प्रार्थना है कि अतिशीघ्र यह महामारी समाप्त हो और स्थितियाँ सामान्य हो। जल्दी ही बच्चें अपने बैग, पानी की बोटल व टिफिन के साथ स्कूल जाएं।इन्ही शुभकामनाओं के साथ !

From Alumni's Desk

ज़ाकिर हुसैन
भूतपूर्व विद्यार्थी (बैच 1992)

मैं जाकिर हुसैन वर्तमान में कांवटिया अस्पताल में डॉक्टर के पद पर कार्यरत हूं मैंने कक्षा 6में श्री खंडेलवाल वैश्य केंद्रीय माध्यमिक विद्यालय, स्टेशन रोड जयपुर में प्रवेश लिया था तथा कक्षा 9 से 11 तक पढ़ाई वाणिज्य संकाय से की थी तथा प्रथम वर्ष से विज्ञान संकाय में प्रवेश लेकरडॉक्टरी की पढ़ाई पूर्ण की ।

स्वतंत्रता दिवस (भारत)

नई दिल्ली. 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ था। उस दिन भारत को ब्रिटिशों के 200 साल के शासन से मुक्त हो गया था। हालांकि, हर साल स्वतंत्रता दिवस की तरह 15 अगस्त को उस साल प्रधानमंत्री ने लाल किले से झंडा नहीं फहराया था। देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने 16 अगस्त 1947 को झंडा फहराया था।
यहीं नहीं उस समय भारत का कोई राष्ट्रगान भी नहीं था। हालांकि, रविन्द्रनाथ टैगोर ने जन गण मन 1911 में ही लिख दिया था। लेकिन इसे 1950 में राष्ट्रगान के तौर पर मान्यता मिली ।

इतिहास

क्या हुआ था उस दिन?
15 अगस्त 1947 को लॉर्ड माउंटबेटन ने अपने दफ्तर से काम किया। दोपहर में नेहरू ने उन्हें अपने मंत्रिमंडल की सूचीं सौंपी। इसके बाद उन्होंने इंडिया गेट के पास एक सभा को संबोधित किया।

भारत की स्वतंत्रता
यूरोपीय व्यापारियों ने 17वीं सदीं से ही भारतीय उपमहाद्वीप में पैर जमाना आरम्भ कर दिया था। अपनी सैन्य शक्ति में बढोतर करते हुए ईस्ट इडिया कम्पनी ने 18वीं सदीं के अन्त तक स्थानीय राज्यों को अपने वशीभूत करके अपने आप को स्थापित कर लिया था। 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के बाद भारत सरकार अधिनियम 1858 के अनुसार भारत पर सीधा आधिपत्य ब्रितानी ताज (ब्रिटिश क्राउन) अर्थात ब्रिटेन की राजशाही का हो गया। दशकों बाद नागरिक समाज ने धीरे.धीरे अपना विकास किया और इसके परिणामस्वरुप 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस आई० एन० सी० निर्माण हुआ। 123 प्रथम विश्व युद्ध के बाद का समय ब्रितानी सुधारों के काल के रूप में जाना जाता है जिसमें मोंटेगू चेम्सफोर्ड सधुार गिना जाता है लेकिन इसे भी रोलेट एक्ट की तरह दबाने वाले अधिनियम के रूप में लिखा जाता है जिसके कारण स्वरुप भारतीय समाज सुधारकों द्वारा स्वशासन का आवाहन किया गया। इसके परिणामस्वरूप महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों तथा राष्ट्रव्यापी अहिसंक आंदोलनों की शुरुआत हो गयी। 1930 के दशक के दौरान ब्रितानी कानूनों में धीरे.धीरे सुधार जारी रहे परिणामी चुनावों में कांग्रेस ने जीत दर्ज की।
1915-1917 अगला दशक काफी राजनीतिक उथल पथुल वाला रहा द्वितीय विश्व युद्ध में भारत की सहभागिता, कांग्रेस द्वारा असहयोग का अन्तिम फैसला और अखिल भारतीय मुस्लिम लीग द्वारा मुस्लिम राष्ट्रवाद का उदय। 1947 में स्वतंत्रता के समय तक राजनीतिक तनाव बढता गया। इस उपमहाद्वीप के आनन्दोत्सव का अंत भारत और पाकिस्तान के विभाजन के रूप में हुआ।

स्वतंत्रता से पहले स्वतंत्रता दिवस
29 लाहौर सत्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज घोषणा की और 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में घोषित किया। कांग्रेस ने भारत के लोगों से सविनय अवज्ञा करने के लिए स्वयं प्रतिज्ञा करने व पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्ति तक समय-समय पर जारी किए गए कांग्रेस के निर्देशों का पालन करने के लिए कहा।
इस तरह के स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन भारतीय नागरिकों के बीच राष्ट्रवादी ईधन झोंकने के लिये किया गया व स्वतंत्रता देने पर विचार करने के लिए ब्रिटिश सरकार को मजबूर करने के लिए भी किया गया। कांग्रेस ने 1930 और 1950 के बीच 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया। इसमें लोग मिलकर स्वतंत्रता की शपथ लेते थे। जवाहरलाल नेहरु ने अपनी आत्मकथा में इनका वर्णन किया है कि ऐसी बैठकें किसी भी भाषण या उपदेश के बिना, शान्तिपूर्ण व गंभीर होती थीं। गांधी जी ने कहा कि बैठकों के अलावा, इस दिन को, कुछ रचनात्मक काम करने में खर्च किया जाये जैसे कताई कातना या हिंदुओं और मुसलमानों का पुर्नमिलन या निषेध काम, या अछूतों की सेवा। 1947 में वास्तविक आजादी के बाद 11,भारत का संविवधान 26 जनवरी 1950 को प्रभाव में आया, तब के बाद से 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।

स्वतंत्रता दिवस (भारत)

समारोह

तात्कालिक पृष्ठभूमि

सन्1946 में, ब्रिटेन की लेबर पार्टी की सरकार का राजकोष, हाल ही में समाप्त हुए द्वितीय विश्व युद्ध के बाद खस्ताहाल था। तब उन्हें एहसास हुआ कि न तो उनके पास घर पर जनादेश था और न ही अंर्तराष्ट्रीय समर्थन । इस कारण वे तेजी से बेचैन होते भारत को नियंत्रित करने के लिए देसी बलों की विश्वसनीयता भी खोते जा रहे थे। फ़रवरी 1947 में प्रधानमंत्री क्लमेंट एटली ने ये घोषणा की कि ब्रिटिश सरकार जून 1948 से ब्रिटिश भारत को पूर्ण आत्म-प्रशासन का अधिकार प्रदान करेगी।12,13,14,15, अंतिम वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन ने सत्ता हस्तांतरण की तारीख को आगे बढा दिया क्योंकि उन्हें लगा कि, कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच लगातार विवाद के कारण अतंरिम सरकार का पतन हो सकता है। उन्होंने सत्ता हस्तातंरण की तारीख के रुप में, द्वितीय विश्व युद्ध, में जापान के आत्म-समर्पण की दुसरी सालगिरह 15 अगस्त को चनु। ब्रिटिश सरकार ने ब्रिटिश भारत को दो राज्यों में विभाजित करने के विचार को 3 जनू 1947 को स्वीकार कर लिया व ये भी घोषित किया कि उत्तराधिकारी सरकारों को स्वतंत्र प्रभुत्व दिया जाएगा और ब्रिटिश राष्ट्रमंडल से अलग होने का पूर्ण अधिकार होगा। यूनाइटेड किंगडम की संसद के भारतीय स्वतंत्रता अधिननयम 1947 10 और 11 जियो 6 सी. 30 के अनुसार 15 अगस्त 1947 से प्रभावी अब बांग्लादेश सहित ब्रिदिश भारत को भारत और पाकिस्तान नामक दो नए स्वतंत्र उपनिवेशों में विभाजित किया

और नए देशों के सबंधित घटक असैंबलियों को पूरा संवैदानिक अधिकार दे दिया। 18 जुलाई 1947 को इस अधिनियम को शाही स्वीकृति प्रदान की गयी। 15 अगस्त 1947 को सुबह 11:00 बजे संघटक सभा ने भारत की स्वतंत्रता का समारोह आरंभ किया, जिसमें अधिकारों का हस्तांतरण किया गया। जैसे ही मध्य रात्री की घडी आई भारत ने अपनी स्वतंत्रता हासिल की और एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गया।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर

प्रवासी भारतीयों विशेषकर भारतीय आप्रवासियों की उच्च सघनता के क्षेत्रों में परेड और प्रतियोगिताओं के साथ दुनिया भर में स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। न्यूयॉर्क और अन्य अमेरिकी शहरों में कुछ स्थानों में, 15 अगस्त प्रवासी और स्थानीय आबादी के बीच में भारत दिवस बन गया है। यहां लोग 15 अगस्त के आसपास या सप्ताह के अंतिम दिन पर भारत दिवस मनाते हैं व प्रतियोगिताएँ रखते हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर

देश के प्रथम नागरिक और देश के राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस की पूर्वसंध्या पर राष्ट्र के नाम संबोधन देते हैं। इसके बाद अगले दिन दिल्ली में लाल किले पर तिरंगा झंडा फहराया जाता है, जिसे 21 तोपों की सलामी दी जाती है। इसके बाद प्रधानमंत्री देश को सम्बोधित करते हैं। आयोजन के बाद स्कूल छात्र तथा राष्ट्रीय कैडिट कोर के सदस्य राष्ट्र गान गाते हैं। लाल किले में आयोजित देशभक्ति से ओतप्रोत इस रंगारंग कार्यक्रम को देश के सार्वजनिक प्रसारण सेवा दुरदर्शन चैनल द्वारा देशभर में सजीव लाइव प्रसारित किया जाता है। स्वतंत्रता दिवस की संध्या पर राष्ट्रीय राजधानी तथा सभी शासकीय भवनों को रंग बिरंगी विद्युत सज्जा से सजाया जाता है, जो शाम का सबसे आकर्षक आयोजन होता है।

राज्य/स्थानीय स्तर पर

देश के सभी राज्यों की राजधानी में इस अवसर पर विशेष झंडावंदन कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, तथा राज्य के सुरक्षाबल राष्ट्रध्वज को सलामी देते हैं। प्रत्येक राज्य में वहाँ के मुख्यमंत्री ध्वजारोहण करते हैं। स्थानीय प्रशासन, जिला प्रशासन, नगरीय निकायों, पंचायतों में भी इसी प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। शासकीय भवनों को आकर्षक पुष्पों से तिरंगे की तरह सजाया जाता है। छोटे पैमाने पर शैक्षिक संस्थानों में, आवासीय संघों में, सास्कृतिक केन्द्रों तथा राजनैतिक सभाओं का आयोजन किया जाता है।

एक अन्य अत्यंत लोकप्रिय गतिविधि जो स्वतंत्रता की भावना का प्रतीक है और यह है पतंगें उडाना (अधिकतर दिल्ली व गुजरात में)। आसमान में हजारों रंग बिरंगी पतंगें दिखी जा सकती हैं, ये चमकदार पतंगें हर भारतीय के घर की छतों और मैदानों में दिखी जा सकती हैं और ये पतंगें इस अवसर के आयोजन का अपना विशेष तरीका है।

The KVC Voice

By Shree Khandelwal Vaishya Central Senior Sec. School

Edition : 5
Date : 25 July 2021
विक्रमी संवत् 2078 युगाब्द 5123
श्रावण कृष्ण एकम
khandelwalschool.com

The KVC Voice

By Shree Khandelwal Vaishya Central Senior Sec. School